International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-06-2019; Accepted: 25-07-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 115-117

बैगा जनजाति में साक्षरता विकास की प्रवृत्तिः म.प्र. के बालाघाट जिला का प्रतीक भौगोलिक अध्ययन

नरेन्द्र कुमार भैरम[1], डॉ. सी.पी. तिवारी[2]

[1] शोध छात्र भूगोल, शासकीय ठा. रणमत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

[2] सेवानिवृत्त प्राध्यापक भूगोल, 11/231, तिलक नगर, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
मध्यप्रदेश के बालाघाट जिला में बैगा जनजाति के लोग मुख्यतः वैहर, विरसा एवं परसवाड़ा विकासखण्ड में गोड़ जनजाति के साथ निवास करते हुए पाए जाते है। स्वतंत्रता के बाद 'सबके लिए शिक्षा' अभियान के अन्तर्गत बैगा जनजाति की साक्षरता में निरंतर वृद्धि हो रही है। जनगणना वर्ष 1971 में कुल बैगा जनसंख्या के 3.14 प्रतिशत भाग साक्षर थे, जो 1981 की स्थिति में बढ़कर 7.39 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार 1971–81 अवधि में साक्षरता दर में 4.25 प्रतिशत अभिवृद्धि हुई। 1981–91, 1991–2000 एवं 2001–2011 अवधि में क्रमशः 10.27 प्रतिशत, 10.91 प्रतिशत एवं 12.84 प्रतिशत की अभिवृद्धि अंकित हुई मिलती है। स्पष्ट होता है कि इस जनजाति की जनसंख्या में साक्षरता की दर उत्तरोत्तर अभिवृद्धि की ओर है।

मूल शब्दः बैगा, साक्षरता, दशक, वृद्धि

प्रस्तावना
1947 के पूर्व से ही ब्रिटिश सरकार अपने प्रशासकीय एवं विभिन्न संसाधनों के दोहन के उद्देश्य से भारत में पाश्चात्य शिक्षा आधारित शिक्षण केन्द्रों को स्थापित कर शिक्षा विकास के प्रयास किये थे। ऐसे शिक्षा केन्द्रों का व्यापक स्तर पर न होने के कारण देश में शिक्षा का विकास वान्छित गतिसे न हो सका। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय योजनाकारों, नियोजकों एवं राजनैतिकों ने शिक्षा के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया।[1] उनकी यह सोच रही है कि जब तक समूचे देश के नागरिक शिक्षित नहीं होंगे तब तक भारत का वास्तविक विकास संभव नहीं हो सकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये शिक्षा के विस्तार संबंधी नीतियों को निर्धारित करते हुए विभिन्न विधियों एवं तकनीकों का उपयोग किया गया, इस प्रकार के प्रयोग नगरीय क्षेत्रों एवं नगरीय समूहों के समीपवर्ती जनजातीय जनसंख्या को साक्षर होने में तो गति प्रदान की,[2] किन्तु नगरों से दूर घने वनों एवं पहुॅच से दूर स्थित भू–प्रदेशों में वांछित विकास संभव नही हो पाया।

शोध विधि
प्रस्तावित शोध अध्ययन 'बैगा जनजाति में साक्षरता विकास की प्रवृत्ति' द्वितीयक आंकड़ों के प्रयोग द्वारा पूर्ण किया गया है। अध्ययन के बोधगम्यता के लिए आवश्यकतानुसार आरेखों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र
मध्यप्रदेश के जबलपुर संभाग के दक्षिणी भाग में जिला बालाघाट 21°19′ उत्तरी अक्षांश से 22°24′ उ.अक्षांश एवं 79°31′ पूर्वी देशान्तर से 81°31′ पूर्वी देशान्तर के मध्य एक विषम धरातलीय विशेषताओं से युक्त भूभाग 9245 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत है। वर्ष 2018 की स्थिति में यह जिला 11 तहसीलोंएवं 10 विकासखण्डों में वर्गीकृत है[3], जिनमें शोध अध्ययन के लिए चयनित बैगा जनजाति 03 विकासखण्डों – वैहर, परसवाड़ा एवं विरसा के 180 ग्रामों में निवास करते हुए पाए जाते है। ज्ञातव्य हो कि उक्त तीनों विकास महादेव एवं मैकल पर्वत श्रेणियों के वनाच्छादित भूभाग में अवस्थित है[4]।

विश्लेषण
अध्ययन क्षेत्र बालाघाट जिला का बैहर क्षेत्र जो एक जनजातीय बहुल जनसंख्या वाला भूभाग है, में देश की एक अत्यधिक पिछड़ी जनजाति बैगा निवास करते है। पहुॅच से दूर घने वनों में रहने वाली इस जनजाति की जनसंख्या जिले के कुल जनसंख्या का 1.00 भाग है। शिक्षा विकास की नीतियों के तहत देश में निवास करने वाली सम्पूर्ण जनसंख्या को शिक्षित किया जाना था, किन्तु जनजातीय पर्यावरण की भिन्नताओं के कारण एक साथ एक नीति के द्वारा इनके शैक्षणिक विकास को गति नही मिल पा रही थी। अतः अनुसूचित जनजातियों के समग्र समूहों के शैक्षणिक विकास हेतु अलग से एक मंत्रालय को स्थापित करते हुए शिक्षा विकास को संचालित किये जाने लगा, किन्तु मैदानी स्तर पर यह पाया गया कि जनजातीय शिक्षा विभाग की अलग नीतियों के बावजूद भी कुछ जनजातीय समूहों का विकास वान्छित गति से नही हो पा रहा है, जिनमें से एक बैगा जनजाति है। अतः अन्य अति पिछड़ी हुई जनजातियों के आर्थिक–सामाजिक विकास, जिनमें शिक्षा एक अहं मुद्दा रहा, के विकास के लिए बैगा विकास प्राधिकरण की स्थापना की गई, जिसका मुख्यालय बालाघाट जिला के बैहर विकासखण्ड में है। उपर्युक्त प्रयासों के परिणाम मन्दगति से ही सही किन्तु सार्थक रहे। 1971 से वर्तमान समय तक जिले में निवास करने वाली बैगा जनजाति के शैक्षणिक विकास के दशाब्दि प्रवृत्ति निम्नानुसार रही–

सारणी 1: बालाघाट जिला में बैगा जनजाति की शिक्षा के दशकीय वृद्धि का स्वरूप

क्र.	वर्ष	कुल बैगा जनसंख्या	साक्षर बैगा जनसंख्या	कुल बैगा जनसंख्या से प्रतिशत
2.	1971	12628	349	3.14
3.	1981	10122	743	7.39
4.	1991	11862	2089	17.61
5.	2001	14201	4051	28.53
6.	2011	17146	7093	41.37

स्त्रोतः 1. जिला जनगणना पुस्तिका संदर्भित वर्ष जिला बालाघाट
2. साक्षरता 1971 प्राविधिक

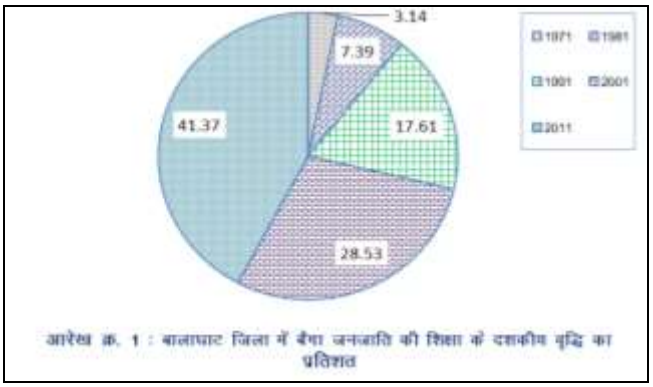

आरेख क्र. 1 : बालाघाट जिला में बैगा जनजाति की शिक्षा के दशकीय वृद्धि का प्रतिशत

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है कि जिला बालाघाट में सन 1961 में बैगा जनजाति की साक्षरता संबंधी आंकड़ों की अनुपलब्धता के कारण 1971 से इनकी शिक्षा के विकास का परिकलन किया गया है, जिसके अनुसार, 1971 में इस जनजाति के 349 व्यक्ति साक्षर थे जो बैहर विकास प्राधिकरण क्षेत्र की कुल बैगा जनसंख्या का 3.14 प्रतिशत भाग है। ज्ञातव्य हो कि अवधि में जिले की समग्र जनजातियों में साक्षरता 12.87 प्रतिशत रही। इस प्रकार बैगा जनजाति की साक्षरता अन्य जनजातियों की तुलना में काफी कम दृष्टिगोचर होती है, जिसका प्रमुख कारण पहुँच में दूरूह वसाव क्षेत्र का होना रहा। 1971 की तुलना में 1981 में जिले में निवासरत बैगाओं की साक्षरता बढ़कर 7.39 प्रतिशत हो गई जो 1971 आधार वर्ष की तुलना में 4.25 प्रतिशत अधिक रही, किन्तु इसी अवधि में कुल जनजातिय साक्षरता बढ़कर 20.64 प्रतिशत हो गई। इस प्रकार कुल जनजातियों की साक्षरता से पिछड़ी हुई ही रही। मन्द दर के अन्य प्रमुख कारणों में बैगा निवास क्षेत्रों की कठिन गम्यता एवं इनके सामाजिक संरचना मुख्य रूप से उत्तरदायी पाये गये। 1981–1991 अवधि में बैगा साक्षरता में आंशिक सुधार दृष्टिगोचर होता है। 1991 में बैगा साक्षरता बढ़कर 17.61 प्रतिशत हो गयी जो 1981 की तुलना में 10.27 प्रतिशत अधिक रही। इस अवधि में बैगा शिक्षा विकास के लिए स्थापित बैगा विकास प्राधिकरण की अहं भूमिका उत्तरदायी रही।

2001 की जनगणना के अनुसार बैगा जनजाति की साक्षरता बढ़कर 28.53 प्रतिशत हो गई जो आधार वर्ष 1991 की तुलना में 10.91 प्रतिशत ज्यादा रही। इस अवधि में बैगा साक्षरता वृद्धि की दर सन्तोषप्रद कही जा सकती है। इस वृद्धि दर के उत्तरदायी कारकों में विभिन्न शासकीय सुविधाओं के साथ ही बैगा गाँवों में विद्यालय स्थापित करने एवं आवागवन के साधनों में विकास प्रमुख रहे।

2001–2011 की अवधि में बैगा साक्षरता में तीव्र बृद्धि दर दृष्टिगोचर होती है। 2011 की स्थिति में इस जनजाति की कुल साक्षरता 41.37 प्रतिशत पाई गई, जो 2001 की तुलना में 12.84 प्रतिशत अधिक है। इनके दशकीय साक्षरता दर के वृद्धि में बैगा विकास प्राधिकरण की भूमिका महत्व रही, जिसके प्रयास से सभी बैगा ग्रामों की गम्यता सुनिश्चित करते हुए शासकीय शैक्षणिक संस्थानों को स्थापित किया, साथ ही शिक्षा का व्यापक–प्रचार करते हुये इस जनजाति के बालक/बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने हेतु अभिप्रेरित किया। बालाघाट जिले की बैगा जनजाति में साक्षरता के दशाब्दि विकास की दर को निम्नांकित 03 वर्गो में विभक्त किया जा सकता है –

1. निम्न साक्षरता वृद्धि के दशक
2. मध्यम साक्षरता वृद्धि के दशक
3. तीव्र साक्षरता वृद्धि का दशक

1. निम्न साक्षरता वृद्धि के दशक (5 प्रतिशत से कम)

इस सवंर्ग 1961–71 एवं 1971–81 के दशक सम्मिलित है। 1961 के आधार वर्ष पर 1971 में बैगा जनसंख्या की वृद्धि दर 3. 14 प्रतिशत एवं 1971 आधार वर्ष पर 1981 में 4.25 अंकित मिली। इस प्रकार उक्त दोनों दशक बैगा शिक्षा वृद्धि दर की दृष्टि से निम्न साक्षरता वृद्धि के दशकों में समाहित है।

2. मध्यम साक्षरता विकास के दशक (5 से 10 प्रतिशत वृद्धि दर)

बैगा जनजाति में साक्षरता वृद्धि की दर इस सम्वर्ग में निरंक दृष्टिगोचर होती है।

3. उच्च साक्षरता वृद्धि का दशक (10 प्रतिशत से अधिक):

इस सम्वर्ग में 1981 आधार वर्ष पर 1991 में10.22 प्रतिशत, 1991 आधार वर्ष पर 2001 में 10.92प्रतिशत एवं 2001 आधार वर्ष पर 2011 में 12.84 प्रतिशत साक्षरता दर वृद्धि का प्रतिशत रहा, जो कि बैगा जनजाति के परिप्रेक्ष्य में उच्च साक्षरता वृद्धि के दशक है। 1981–2011 अवधि में तीव्र साक्षरता वृद्धि की दर में प्रमुख कारणों में बैगा महिलाओं की शिक्षा प्राप्त करने के लिए अभिरुचियों का बढ़ना, शासन की योजनाओं का मैदानी स्तर पर नवीनीकरण, जागरुकता के लिए व्यापक प्रचार–प्रसार, स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका आदि प्रमुख उत्तरदायी रहे।

जनजातीय साक्षरता में बैगा जनजाति की साक्षरता का स्वरूप :

बैहर, परसवाड़ा एवं विरसा विकासखण्डों में विभिन्न वर्गो के लोग निवास करते हैं, जिनमें एक बैगा जनजाति है। बैहर विकासखण्ड में सबसे अधिक जनजातीय जनसंख्या पाई जाती है। बैगा प्रधान उक्त तीनों विकासखण्डो की समाकेतिक जनसंख्या 17143 व्यक्ति है। बैगा जनजाति की साक्षरता की तुलनात्मक व्याख्या करने से स्पष्ट होता है कि तीनों विकासखण्डों में कुल जनसंख्या, अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या की साक्षरता की तुलना में बैगा साक्षरता का प्रतिशत कम है, जैसा की निम्नांकित सारणी 2 से स्पष्ट होता है।

सारणी 2: जिला बालाघाट : बैगा जनजाति की साक्षरता का तुलनात्मक अध्ययन 2011

क्र.	विवरण	कुल साक्षरता	अनुसूचित जनजाति में साक्षरता	बैगा जनजाति में साक्षरता
1.	जिला बालाघाट	67.46	52.26	41.37
2.	वि.खं. बैहर	64.43	53.43	41.88
3.	वि.खं. वरसवाड़ा	58.19	48.61	40.74
4.	वि.खं. विरसा	52.24	43.23	41.16

स्त्रोतः बैगा विकास प्राधिकरण बैहर से प्राप्त जानकारी 2011

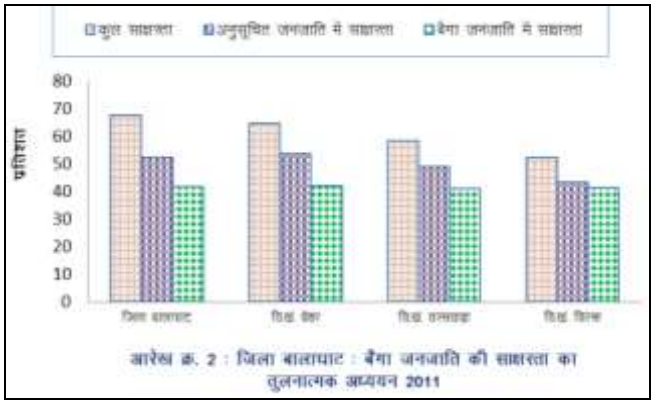

आरेख क्र. 2 : जिला बालाघाट : बैगा जनजाति की साक्षरता का तुलनात्मक अध्ययन 2011

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि बालाघाट जिला की कुल साक्षरता 67.46 प्रतिशत है, जबकि अनुसूचित जनजातियों में साक्षरता का प्रतिशत 52.26 पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में निवासरत जनसंख्या में साक्षरता 41.37 प्रतिशत पाई जाती है, जो जिले की कुल संख्या अनुसूचित जनजातियों की तुलना में क्रमशः 26.09 प्रतिशत एवं 10.89 प्रतिशत कम है। चूंकि जिले के 10 विकासखण्डों में मात्र तीन विकासखण्ड ही ऐसे है, जहाँ बैगा जनजाति का निवास है। अतः उक्त तीनों विकासखण्डों में कुल साक्षरता अनुसूचित जनजाति की साक्षरता के साथ बैगा जनजाति की तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि बैहर विकासखण्ड की कुल साक्षरता 64.43 प्रतिशत एवं जनजातीय साक्षरता 53.43 प्रतिशत पाई जाती है, जो बैगा जनसंख्या की साक्षरता 41.88 प्रतिशत से अधिक है। इसी क्रम में परसवाड़ा विकासखण्ड की कुल साक्षरता 58.19 प्रतिशत है, जबकि अनुसूचित जनजाति की साक्षरता 48.61 प्रतिशत मिलती है। इसी विकासखण्ड में निवास करने वाली बैगा जनसंख्या की साक्षरता दर 40.74 प्रतिशत है, जो विकासखण्ड की कुल जनसंख्या एवं जनजातीय जनसंख्या की साक्षरता के प्रतिशत से कम पाई जाती है। जिले का विरसा विकासखण्ड में भी उक्त प्रवृत्तियाँ दृष्टिगोचर होती है। निष्कर्षतः बैगा जनजाति में साक्षरता की दर जिला एवं विकासखण्ड दोनों ही स्तरों में कुल जनसंख्या एवं अनुसूचित जनजातीय जनसंख्या की साक्षरता दर से कम है। बैगा जनजाति की साक्षरता दर में उक्त कमी होने के प्रमुख कारणों में पहुंच से दुरूह स्थलों पर निवास होना, घने वन, विषम जलवायु के साथ–साथ सामाजिक अलगाव की आदतों के कारण शासन द्वारा संचालित सामाजिक–आर्थिक योजनाओं की समुचित जानकारी का न होना प्रमुख है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः जिले की बैगा जनसंख्या में शासकीय प्रयासों से स्नैह–स्नैह साक्षरता का विकास हो रहा है। शिक्षा प्राप्ति के लिए अब इस जनजाति के लोगों में रुझान बढ़ रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, विजय शंकर एवं शर्मा – भारत की जनजातीय संस्कृति, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, द्वितीय संस्करण, 1993, पृष्ठ 88–89
2. साकेत, उमेश – आदिवासी परियोजना क्षेत्र जयसिंह नगर के विशेष संदर्भ में जनजातीय शिक्षा विकासः एक भौगोलिक अध्ययन अप्रकाशित शोध अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा 2009, पृष्ठ 137
3. जिला सांख्यिकीय पुस्तिका जिला बालाघाट (म.प्र.) 2017.
4. फिजिकल प्लेट क्र. 32, नागपुर शीट, सर्वे ऑफ इण्डिया प्रकाशन, देहरादून 1992.